जीवाजी विश्वविद्यालय में पर्यावरण संरक्षणः एक विश्लेषण

पेनारोमा – विशेषांक, अक्टूबर 2016

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

विशेषांक

परिचय

पर्यावरणीय नीति का परिदृश्य

पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण

प्राकृतिक चिकित्सा और हर्बल औषधियों के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

जैव–शौचालयों की स्थापना

जल संचयन और भूजल रिचार्जिग प्रणाली का कार्यान्वयन

सौर ऊर्जा प्रणाली का इस्तेमाल व प्रयोगों को बढावा

वाहन निषेध दिवस

विद्युत ऊर्जा के दुरूपयोग की रोकथाम

जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरणीय गतिविधियों को सम्पन्न कराने हेतु पर्यावरणीय कैलेण्डर को तैयार एवं प्रकाशित करना

योगदानकर्ता

प्रो॰ ओ॰ पी॰ अग्रवाल
प्रो॰ ऐ॰ के॰ जैन

प्रो॰ आर॰ जे॰ राव

प्रो॰ जी॰ बी॰ के॰ एस॰ प्रसाद

डॉ॰ हरेन्द्र कुमार शर्मा

सहयोग

श्री अरूण चौहान, विश्वरंजन गुप्ता, राजेश नायक, अरविंद भदौरिया,राकेश गुर्जर एंव यंत्री विभाग के समस्त कर्मचारीगण।

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
Jiwaji University, Gwalior
पर्यावरण संरक्षण: एक विश्लेषण

परिचय

पर्यावरण का सीधा प्रभाव, उसमें रहने वाले जीव–जन्तुओं व वनस्पतियों पर पड़ता है तथा मानवजनित क्रियाकलापों के द्वारा पर्यावरणीय गुणवत्ता प्रभावित होती है। पर्यावरण की गुणवत्ता बनाये रखना तथा पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रित रखना अर्थात पर्यावरण संरक्षण हमारा दायित्व है। जिस प्रकार बिना किसी योजना के किसी भी कार्य का सफल सम्पादन मुश्किल होता है इसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण हेतु भी एक कार्य योजना बनाना आवश्यक है और किसी संस्था अथवा संगठन को इस हेतु एक नीति भी बनाना जरूरी है। पर्यावरणीय नीति कानूनों, नियमों और पर्यावरण के मुद्दों के विषय में कार्य करने के लिये एक संगठन के रूप में प्रतिबद्धता को दर्शाती है। पर्यावरणीय नीति के माध्यम से पर्यावरण का संरक्षण एवं गुणवत्ता को बनाये रखना है।

आज के युग में तीव्र गति से औद्योगीकरण हो रहा है और प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित तरीके से दोहन किया जा रहा है, जिसके कारण निकट भविष्य में गंभीर संकट का सामना करना पड़ सकता है। और कई जीव–जन्तुओं व वनस्पतियों की प्रजातियों के अस्तित्व और जैवविविधता को खतरा उत्पन्न हो रहा है। वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विश्वव्यापी समस्या है जो कई रूपों में विद्यमान है। जैसे वैश्विक जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत का क्षरण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग और उनके दुष्प्रभाव से प्राकृतिक असंतुलन, मानव स्वास्थ संबन्धी खतरे उत्पन्न हो रहे है।

इस प्रकार पर्यावरणीय नीति के तहत पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने व संरक्षित करने की नितांत आवश्यकता है और जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु नीति बनाई गई है जिसके माध्यम से पर्यावरण के संरक्षण व सुधार हेतु लगातार प्रयास किये जा रहे हैं तथा नवीन हरित नकनीकों तथा गैर–पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोंतों के प्रयोग पर कार्य किया जा रहा है।

पर्यावरणीय नीति का परिदृश्य

पर्यावरण तथा मानवीय गतिविधियाँ एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। पर्यावरण के महत्व, पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव, पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम और पर्यावरण संरक्षण के उपायों का प्रचार प्रसार करना पर्यावरण नीति के आवश्यक अंग हैं। पर्यावरण संरक्षण हेतु दूर–दर्शिता एवं समर्पण भावना के साथ कार्यान्वयन करना पर्यावरण नीति का आवश्यक भाग है। विश्वविद्यालय एक स्वायत्त निकाय है और इसके परिसर को स्वच्छ, प्रदूषण रहित व हरा भरा बनाए रखने हेतु पर्यावरण नीति बनाई गई है। विश्वविद्यालय की पर्यावरण नीति में छात्र–छात्राओं की पर्यावरण संबधी जिज्ञासाओं के समाधान तथा उन्हें पर्यावरण के क्षेत्र में कौशल एवं उद्यमिता विकास, उच्च शिक्षा तथा शोध कार्यों में मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के प्रयासों को विशेष महत्व दिया गया है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण

जीवाजी विश्वविद्यालय परिसर में गत तीन वर्षो में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद समिति द्वारा निरीक्षण, दीक्षांत समारोह, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस के शुभ अवसरों पर विश्वविद्यालय परिसर में लगभग 2000 पौधे रोपित किये गये। जो विश्वविद्यालय परिसर को हरा भरा बनाये रखने के साथ–साथ पर्यावरण शुद्धीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जीवाजी विश्वविद्यालय के गालव सभागार में मध्य भारत हिन्दी साहित्य सभा द्वारा साहित्यिक कार्यक्रम दिनांक 12 जुलाई 2015 को आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में गोवा की राज्यपाल डॉ॰ श्रीमति मृदुला सिन्हा उपस्थित रहीं तथा कार्यक्रम के उपरांत महामहिम राज्यपाल एवं कुलपति महोदया प्रो॰ संगीता शुक्ला एवं श्रीमति माया सिंह (नगरीय प्रशासन मंत्री, मध्यप्रदेश शासन) की गरिमामयी उपस्थिति में विश्वविद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया।

जीवाजी विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग द्वारा प्रति वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) को पर्यावरण जागरूकता अभियान आयोजित किया जाता हैं जिसमें विशेषज्ञों द्वारा पर्यावरण संरक्षण व वन्यजीव प्रबंधन पर व्याख्यान कराया जाता है तथा विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा पर्यावरणीय समस्याओ व उनके समाधान हेतु विभिन्न प्रकार के मॉडल, प्रदर्शनी लगायी जाती हैं और उनकी कार्य प्रणाली को समझाया जाता है। पर्यावरण विशेषज्ञों ने छात्रो द्वारा लगाये गये मॉडलों व प्रस्तुत पोस्टरों का निरीक्षण करके उत्कृष्ट मॉडल व पोस्टर का चयन करके छात्रो को पुरस्कार प्रदान करते हैं और पर्यावरण विशेषज्ञ व छात्र मिलकर वृक्षारोपण भी करते हैं।

रोटरी क्लब ग्वालियर तानसेन द्वारा जीवाजी विश्वविद्यालय के चरक उद्यान में 10 अगस्त 2016 को वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलपति महोदया प्रो॰ संगीता शुक्ला की गरिमामयी उपस्थिति में 80 पौधे लगाए गये। जो पर्यावरण स्वच्छता के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ साथ वायु प्रदूषण को नियंत्रित करके प्राणवायु (ऑक्सीजन) उत्पादित कर रहे हैं। चरक उद्यान में अनेक फलदार पेड़ पूर्व में लगाये गये थे जो आज वृक्ष का रूप धारण करके फलों से सुसज्जित हैं और आय के साधन के रूप में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। साथ ही अनेक औषधीय पौधे भी लगाये गये हैं जिनसे बहुमूल्य औषधियाँ प्राप्त करके अनेक रोगों के प्राकृतिक उपचार हेतु प्रयोग की जा रहीं है।

प्राकृतिक चिकित्सा और हर्बल औषधियों के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना

जीवाजी विश्वविद्यालय में हर्बल औषधियों और प्राकृतिक चिकित्सा कें प्रयोग द्वारा जनसमुदाय को बेहतर स्वास्थ्य प्रदान किया जा रहा है। जिससे विभिन्न प्रकार के रोंगों के उपचार हेतु हर्बल फॉर्मूलों के प्रारूप तैयार किये जा रहें हैं एवं इन फॉर्मूलों की वैधता का प्रमाण प्रयोग स्वरूप एनीमल के प्रतिरूपो पर किया जा रहा हैं। साथ ही प्राणिकी अध्ययनशाला, जैवरसायन अध्ययनशाला एवं ट्रॉसलेशन अनुसंधान केंन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से विभिन्न बीमारियों को उपचारित किया जा रहा है। इसके अलावा ट्रॉसलेशन अनुसंधान केंन्द्र द्वारा संचालित क्लीनिक में प्रतिमाह लगभग 450 मधुमेह पीड़ितों को हर्बल औषधियाँ प्रदान की जाती हैं और ऐसे मधुमेह पीड़ितों के लिये आहार व जीवन शैली प्रंबधन के बारे में नियमित रूप से परामर्श प्रदान किया जाता है।

ट्रॉसलेशन अनुसंधान केंन्द्र द्वारा निकट भविष्य में छात्रों और जन सामान्य के लिये ऊर्जा प्रदान करने वाले हर्बल फॉर्मूलों को वितरित करने का प्रस्ताव है। योग केंन्द्र द्वारा भारत योग संस्थान के सहयोग से प्रतिदिन सुबह 6 से 7 बजे तक योग शिविर का आयोजन किया जाता है जिसमें विभिन्न प्रकार की योग क्रियाओं द्वारा जनसामान्य को बेहतर स्वास्थ प्रदान किया जा रहा हैं।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

विश्वविद्यालय परिसर में जैविक कचरे का प्रबंधन

जीवाजी विश्वविद्यालय परिसर में जैविक कचरे को जलाने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया गया है जिसके लिये अनेक स्थानो पर होर्डिंग्स लगाये गये है। और कचरे के प्रबंधन हेतु जगह–जगह कूड़ादान स्थापित किये गयें हैं। नियमित रूप से इन कूड़ादानों से कचरे को इकट्ठा करने के उपरांत केंचुआ खाद केन्द्र में जैविक खाद तैयार की जाती है। इस प्रकार से कचरे का समुचित प्रबंधन, उपयोग व पुनर्चक्रण किया जा रहा है।

केंचुआ खाद प्रक्रिया द्वारा विभन्न प्रकार के अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण एवं परिसर में केंचुआ खाद इकाइयों की स्थपना

जीवाजी विश्वविद्यालय के चरक उद्यान एवं पर्यावरण विभाग में संचालित वर्मी खाद केन्द्र में केंचुआ खाद इकाइयों की स्थापना प्राणिकी अध्ययनशाला द्वारा की गयी है। जिसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के कचरा पदार्थों जैसे पेड–पोधों की सूखी पत्तियाँ, टहनियाँ, मन्दिरों द्वारा विसर्जित किये गये फूलों मालाओं, पत्तियों एवं पालतू जानवरों का गोबर इत्यादि को मिश्रित करके केंचुओं द्वारा खाद में बदल दिया जाता है। और इस प्रकार निर्मित खाद पर्यावरणीय दृष्टि से अधिक उपयोगी है।

कवक ट्राइकोडर्मा और केंचुआ खाद तकनीक से रद्दी कागज का पुनर्चक्रण

जीवाजी विश्वविद्यालय के प्राणीकी विभाग और पर्यावरण विभाग में रद्दी कागज एवं कार्ड बोर्ड को मशीनों द्वारा काटकर ट्राइकोडर्मा कवक एवं केंचुआ पालन तकनीक के द्वारा पुनर्चक्रण किया जाता है। और इस प्रकार बेकार कागज का उपयोग केंचुआ खाद इकाई में किया जा रहा है।

अपशिष्ट प्रबधन हेतु अन्य संस्थानों एवं स्थानों पर केंचुआ खाद इकाइयों की स्थापना

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर द्वारा निम्न महाविद्यालयों एवं अन्य स्थानों पर केंचुआ खाद (अपशिष्ट प्रबंधन) इकाइयों की स्थापना हेतु प्रेरणा एवं सहायता प्रदान की गई है।

- महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, ग्वालियर
- आयुष महाविद्यालय, ग्वालियर
- वन विभाग नर्सरी तपोवन, ग्वालियर
- सरस्वती शिशु मंदिर, ग्वालियर
- शारदा बाल ग्राम, ग्वलियर
- होटल प्रबधंन संस्थान, ग्वालियर
- सावरकर सरोवर पार्क, शिवपुरी
- वाटिका नर्सरी, गुना
- माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन
- एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर
- गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
- अर्नी विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश

घरेलू अपशिष्ट पदार्थों (उद्यान, खाद्य और रसोई) का प्रबन्धन

जैविक अपशिष्ट पदार्थों जैसे घरेलू व पालतू जानवरों के अपशिष्ट, कूड़ा, कचरा व बगीचों से प्राप्त सूखी पत्तियों व घरों से निकलने वाले कचरा खाद्य पदार्थों आदि को एकत्रित करके केंचुआ पालन तकनीक द्वारा खाद तैयार की जा रही है जो पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यन्त लाभकारी होने के साथ–साथ आय के साधन के रूप में विकसित हो रही है।

उद्यान एवं मंदिर अपशिष्ट प्रबंधन इकाई की स्थापना

पर्यावरण विज्ञान विभाग के उद्यान में पादप एवं (मंदिरो के पवित्र फूल) अपशिष्ट प्रबन्धन हेतु एक वर्मीकम्पोसटिंग इकाई की स्थापना की गई है। जिनका उदघाटन 15 जून 2015 को किया गया है। ग्वालियर शहर के तीन प्रमुख मंदिरों द्वारा फूल मालाओं का अपशिष्ट यहॉ प्रेषित किया जाता है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों द्वारा गोबर विहीन वर्मीकम्पोस्टिंग विधि का विकास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मंदिरों की फूल मालाओ का वर्मीप्रवंधन विश्वविद्यालय की विशेष उपलब्धि है। संभवत यह भारत में अपने प्रकार की पहली इकाई है। जिसमें बिना गोबर मिलायें मंदिर अपशिष्ट का प्रबन्धन किया जा रहा है। इस गतिविधि का प्रकाशन एवं प्रसारण स्थानीय संचार माध्यमों के साथ–साथ हिन्दुस्तान टाइम्स तथा जी नेशनल न्यूज एवं डी॰ डी॰ नेशनल न्यूज चैनलों पर भी किया गया है। जी–न्यूज प्रसारण का यू–ट्यूब वीडियो इन्टरनेट और विश्वविद्यालय वेबसाइट पर उपलब्ध है।

https://www.youtube.com/watch?v=c61cbdQ6eWQ

केंचुआ खाद प्रकिया द्वारा घरेलू कचरा प्रबन्धन विधि के व्यापक प्रचार प्रसार की योजना पर कार्य प्रारम्भ किया जाना है। शीघ्र ही इस हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा।

जैव–शौचालयों की स्थापना

छात्र–छात्राओं के छात्रावासों में 'जैव–शौचालयों' की स्थापना के लिये एक पहल की गई है। जीवाजी विश्वविद्यालय और डी. आर. डी. ई. की संयुक्त समिति की बैठक माह जुलाई 2016 को आयोजित की गई थी और इस विषय पर चर्चा की गई। डी. आर. डी. ई. द्वारा जैव–शौचालयों' की स्थापना में तकनीकी सहायता प्रदान करने हेतु प्राप्त की गई है। तथा कार्य योजना पर कार्य चल रहा है।

जल संचयन और भूजल रिचार्जिग प्रणाली का कार्यान्वयन

जल संचयन व भू–जल स्तर को बढाने हेतु जीवाजी विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन सहित अन्य समस्त विभागों व छात्रावासों में वर्षा जल एकत्रित करने हेतु भूमिगत जलीय कक्ष बनाये गये हैं। जो भू–जल स्तर को बढ़ाने में कारगर सिद्ध हो रहे हैं।

सौर ऊर्जा प्रणाली का इस्तेमाल व प्रयोगों को बढावा

सौर उर्जा के उपयोग को बढावा देने हेतु विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग में सौर प्लेट एवं सौर आसवन संयंत्र स्थापित किये गये हैं जिनका उपयोग शोध कार्यों में किया जा रहा है। साथ ही विश्वविद्यालय के मृगनयनी छात्रावास, लक्ष्मीबाई छात्रावास, आर्यभट छात्रावास व केप्टन रूपसिंह छात्रावास में सौर गीजर लगाये गयें हैं जो बिजली बचाने में सराहनीय पहल है।

वाहन निषेध दिवस

जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरण प्रदूषण रोकने हेतु प्रत्येक माह के द्वितीय व चतुर्थ सोमवार को विश्वविद्यालय परिसर में वाहनों के प्रवेश पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया गया है और इन दिवसों में नागरिकों को साइकिल के उपयोग हेतु प्रेरित किया गया है। तथा विश्वविद्यालय द्वारा ई–रिक्शा का शुभारम्भ किया गया है। जो प्रमुख रूप से दिव्यांग व्यक्तियों, वरिष्ठ नागरिकों एवं महिलाओं हेतु विश्वविद्यालय में आवागमन के साधन के रूप में उपलब्ध है।

विद्युत ऊर्जा के दुरूपयोग की रोकथाम

विद्युत के दुरूपयोग को रोकने एवं विद्युत की बचत करने हेतु जीवाजी विश्वविद्यालय परिसर व छात्रावासों में 400 वाट की पुरानी लाइटों को हटाकर 90 वाट की 180 एल.ई.डी. व सी.एफ.एल. लाइटें लगायी गयी है। इसके अतिरिक्त सौर ऊर्जा से चलित लाइटें व गीजर इत्यादि उपकरण लगाये गये हैं और इस प्रकार प्रतिमाह विद्युत खपत कम हो गई है तथा पर्यावरण प्रदूषण रोकने में सहायता मिली है साथ ही बिजली की बचत हो रही है। सौर ऊर्जा के उपयोग हेतु विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा कार्य किया जा रहा है। और सस्ते व सुगम तरीकों द्वारा नवीनीकरणीय प्राकृतिक संसाधनों से ऊर्जा प्राप्त करने की विधियों को विकसित किया जा रहा है। जिससे प्राकृतिक ऊर्जा का समुचित तरीके से उपयोग किया जा सके।

पॉलिथीन कैरी बैग का उपयोग, कचरा जलाने एवं धूम्रपान करने पर प्रतिबंध

जीवाजी विश्वविद्यालय परिसर में प्लास्टिक एवं पोलिथीन कैरी बैग के उपयोग तथा कचरा जलाने पर प्रतिबंध लगाया गया है तथा धूम्रपान निषेध के चेतावनी बोर्ड तथा इन विषयों पर होर्डिंग्स लगाये गये हैं। धूम्रपान निषेध सम्बंधित नियमों का उल्लंघन करने पर आर्थिक दण्ड स्वरूप 200 रू तक जुर्माने का प्रावधान किया गया है।

पर्यावरण मैत्रिक ग्रीन तकनीक उत्पादनों को प्रोत्साहन

पर्यावरण में सहायक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से उपयोगी उत्पादों को बढ़ावा देने वाले उद्योंगों के साथ मिलकर जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरण को स्वच्छ और संरक्षित रखने हेतु विभिन्न प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं। जैसे– जैव अपघटनशील निम्नीकरणीय प्लास्टिक का निर्माण, हानिकारक कीटों तथा मच्छरों के उन्मूलन हेतु पर्यावरणीय मैत्रिक पिंजरों (ट्रेप) का निर्माण किया जा रहा है जिनसे विभिन्न प्रकार के मच्छर जनित रोगों से बचाव सम्भव हो सकता है।

जैव विविधता संरक्षण

जीवाजी विश्वविद्यालय परिसर जैवविविधता संरक्षण की दृष्टि से उपयुक्त स्थल है। परिसर में लगे पेड़ पौधों की प्रजातियाँ विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों के लिए आवास स्थल के साथ–साथ भोजन भी उपलब्ध करते हैं। विश्वविद्यालय परिसर में लगभग 90 प्रकार के पक्षियों की प्रजातियाँ अलग–अलग संख्या में निवास करती है। विशेष रूप से रास्टीय पक्षी मोर एवं मध्यप्रदेश राज्य पक्षी दूधराज पक्षी की प्रजातियॉ विशेष रूप से पायी जाती हैं कई प्रकार की पक्षी प्रजातियाँ प्रजनन काल में इन पेड़ो पर घोंसले बनाकर प्रजनन करते हैं।

परिसर का वातावरण यहाँ मौजूद विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ, पक्षियों के रहने हेतु अनुकूल है जो पक्षी प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरणीय गतिविधियों को सम्पन्न कराने हेतु पर्यावरणीय कैलेण्डर को तैयार एवं प्रकाशित करना

पर्यावरणीय नीति के अंतर्गत जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरणीय कैलेण्डर तैयार करके प्रकाशित किया गया है। जिसमें पर्यावरण से जुडे दिवसो तथा उनके आयोजन की तिथि को मुद्रित किया गया है। साथ ही पर्यावरणीय दिवसो के आयोजन हेतु पर्यावरण विभाग सहित अन्य विभागो को दायित्व सौंपे गये है। इन आयोजनों का उदेश्य विश्वविद्यालय के छात्रों एवं नागरिकों को पर्यावरणीय ज्ञान प्रदान करके पर्यावरण स्वच्छता के प्रति सजग करना है एवं उत्तम नागरिकता का निर्माण करना है।

जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरणीय कैलेण्डर भी प्रसारित किया गया है जिसके अनुरूप समय–समय पर पर्यावरण संबन्धी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना निर्धारित किया गया है। इन कार्यक्रमों में जागरूकता अभियान, पर्यावरण रैली, छात्र– छात्राओं हेतु पर्यावरणीय पोस्टर, मॉडल, आलेख कवितायें, नारे (स्लोगन) आदि की रचनाओं हेतु स्पर्धाऐं, विशेषज्ञ विद्वानों के व्याख्यान, संगोष्ठी, पर्यावरण प्रदर्शनी, पर्यावरण संरक्षण एक हरित तकनीको के जीवंत प्रदर्शन आदि कार्यक्रम सम्मिलित हैं।

JIWAJI UNIVERSITY

OXYGEN ZONE

जीवाजी विश्वविद्यालय
NO VEHICLE DAY
EVERY II AND IV MONDAY

DST-FIST & UGC-SAP
SCHOOL OF STUDIES IN ZOOLOGY

JIWAJI UNIVERSITY
NO VEHICLE DAY
EVERY II AND IV MONDAY

International Agenda
for Botanic Gardens in Conservation
Jiwaji University, Charak Garden
BGCI

पर्यावरणीय कैलेंडर

स.क्रं.	दिवस	दिनाँक
जनवरी		
1	राष्ट्रीय पर्यटन दिवस	25 जनवरी
फरवरी		
2	विश्व आर्द्रभूमि (वेटलैंड) दिवस	2 फरवरी
3	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी
मार्च		
4	विश्व वन्यजीव दिवस	3 मार्च
5	विश्व वानिकी दिवस	21 मार्च
6	विश्व जल दिवस	22 मार्च
अप्रैल		
7	अंतर्राष्ट्रीय खान (माइन) जाकरूकता दिवस	4 अप्रैल
8	विश्व विरासत दिवस	18 अप्रैल
9	विश्व पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल
मई		
10	अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी पक्षी दिवस	10 मई
11	विश्व संग्रहालय दिवस	18 मई
12	अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस	22 मई
13	विश्व कछुआ दिवस	23 मई
जून		
14	विश्व पर्यावरण दिवस	5 जून
15	विश्व सागर (ओसीन) दिवस	8 जून
जुलाई		
16	विश्व जूनोसेस दिवस	6 जुलाई
17	विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
18	विश्व प्राकृतिक संरक्षण दिवस	28 जुलाई
19	अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस	29 जुलाई
अगस्त		
20	विश्व फोटोग्राफी दिवस	19 अगस्त
सितम्बर		
21	विश्व ओजोन दिवस	16 सितम्बर
22	विश्व पर्यटन दिवस	27 सितम्बर
अक्टूबर		
23	विश्व वन्यजीव सप्ताह	1–7 अक्टूबर
24	विश्व आवास दिवस और विश्व प्राकृति दिवस	3 अक्टूबर
25	विश्व जीव दिवस	4 अक्टूबर
नवम्बर		
26	विश्व मत्स्य दिवस	21 नवम्बर
दिसम्बर		
27	अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस	14 दिसम्बर

Patron: **Prof. Sangeeta Shukla**
Editor: Prof. R.J.Rao
Layout and Design: Satya Narayan Rawat, Rajesh Gurjwar and Ramkumar Lodhi
Photo credits: Jitendra Narwariya and Data Base Centre

Printed & Published by Registrar, Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh
Contact: 0751-2442801